B.A Part III Paper V

Western Ethics

30/05/2020

Dr. Anita Kr. Gupta
J.K. College Biraul

Deontological Ethics Kant.

कांट का धर्मशास्त्र या नीतिशास्त्र

आधुनिक युग में बुद्धिवाद का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण कांट के नैतिक दर्शन में प्राप्त होता है। कांट के अनुसार नैतिक नियमों का ज्ञान व्यावहारिक बुद्धि के द्वारा होता है। यह व्यावहारिक बुद्धि विवेक-शक्ति है जिसके द्वारा नैतिक नियमों का सहज बोध होता है। किसी कार्य के औचित्य का ज्ञान विवेक से होता है। यह विवेक-शक्ति सभी मनुष्यों में है, अतः सभी मनुष्यों को किसी कार्य के उचित या अनुचित रूप का सहज ज्ञान होता है। इस रूप में कांट का नैतिक दर्शन बुद्धिवादी अवश्य है, क्योंकि इनके अनुसार बुद्धि के द्वारा ही नैतिक नियमों का सहज ज्ञान होता है, परन्तु नैतिक नियमों का सहज बोध करने वाली बुद्धि साधारण बुद्धि से भिन्न है। साधारण बुद्धि से गणित आदि

विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है, परन्तु नैतिकता के ज्ञान के लिए असाधारण बुद्धि की आवश्यकता है। इसे ही कांट व्यावहारिक बुद्धि या विवेक-शक्ति कहते हैं। इस व्यावहारिक बुद्धि से सभी नैतिक नियमों का सहज ज्ञान होता है। इन नैतिक नियमों को किसी विशेष कर्म पर लागू करने से उस कार्य की नैतिकता का पता लगता है। यदि वह कार्य नैतिक नियमों के अनुकूल है तो उचित है और यदि प्रतिकूल है तो अनुचित। इस प्रकार उचित और अनुचित के सामान्य नियम तो व्यावहारिक बुद्धि की देन है परन्तु किसी कार्य-विशेष के नैतिक गुण अर्थात कार्य के उचित या अनुचित रूप को हम तभी जान पाते हैं जब हम उस कार्य को बौद्धिक नियमों के अनुकूल या प्रतिकूल पाते हैं।

Notes

जिस प्रकार कोई उचित कार्य औचित्य के मानदण्ड

या नियम के अनुकूल कार्य है उसी प्रकार इसके प्रतिकूल कार्य अनुचित है। यहाँ तीन बातें स्पष्ट हैं। पहली बात यह है कि उचित या अनुचित मानदण्ड का ज्ञान या नियम व्यावहारिक बुद्धि की देन है। तात्पर्य यह है कि सभी नैतिक नियम बौद्धिक हैं परन्तु नैतिक गुण कार्य में रहता है। तात्पर्य यह है कि किसी कार्य का उचित या अनुचित होना कार्य पर ही निर्भर है। दूसरी बात यह है कि नैतिक नियमों का ज्ञान सहज है। हमारी बुद्धि सहज रूप से सभी नैतिक नियमों को जानती है, परन्तु किसी कार्य का नैतिक होना अनुमान पर आधारित है। हम बौद्धिक नियमों को किसी कार्य पर लागू करते हैं यदि कार्य को नियमों के अनुकूल पाते हैं तो उचित की संज्ञा देते हैं और यदि प्रतिकूल पाते हैं तो अनुचित कहते हैं। अतः

किसी कार्य का उचित या अनुचित होना सहज नहीं, वरन अनुमानजन्य है।

तीसरी बात यह है कि सभी नैतिक नियम अनुभव निरपेक्ष हैं उचित और अनुचित के नियम को हम अनुभव से नहीं जान सकते। हमारा अनुभव सीमित है। हम सीमित अनुभव से सामान्य नियमों का प्रामाणिक ज्ञान नहीं कर सकते हैं। हम नियमों को अनुभव के विषयों पर लागू अवश्य करते हैं, परन्तु ये नैतिक नियम स्वयं अनुभव निरपेक्ष हैं। इन्हें अनुभवेतर भी कहा जाता है, क्योंकि ये अनुभव की परिधि को पार कर जाते हैं। उचित और अनुचित के मानदण्ड को हम अनुभव द्वारा नहीं जान सकते। यह तो अनुभव-निरपेक्ष

Notes

Scanned by CamScanner

परन्तु इस मानदण्ड को हम अनुभव द्वारा नहीं जान सकते। यह तो अनुभव निरपेक्ष है, परन्तु इस मानदण्ड को अनुभव के विषय पर लागू अवश्य किया जाता है। इस प्रकार नैतिक नियम अनुभव-निरपेक्ष है, परन्तु किसी कार्य का नैतिक होना तो अनुभव-सापेक्ष है। औचित्य का मानदण्ड किसी कार्य को उचित या अनुचित रूप में मानने के लिए ही है। कान्ट के अनुसार आदेश दो प्रकार के होते हैं

(क) सापेक्ष आदेश

(ख) निरपेक्ष आदेश

सापेक्ष आदेश वह है जिसमें कोई अपेक्षा या शर्त हो। इन सापेक्ष आदेशों को हेतु फलाश्रित तर्कवाक्य के द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है। यदि सम्पत्ति चाहिए तो अर्थशास्त्र के नियमों का पालन करो।

यदि स्वास्थ्य चाहिए तो स्वास्थ्य के नियमों का पालन करो। इन आदेशों में उत्तर भाग पूर्व भाग पर आश्रित है। निरपेक्ष आदेश वे हैं जिनमें कोई अपेक्षा न हो अर्थात जो किसी शर्त पर आधारित नहीं। कांट ने स्वयं कहा है कि बुद्धि की आज्ञा ही आदेश है जिसका पालन करना मानव का कर्तव्य है। कान्ट के अनुसार नैतिक नियमों का ज्ञान व्यावहारिक बुद्धि के द्वारा होता है। प्रत्येक बुद्धिमान प्राणी को इस कार्य को स्वतः अवश्य समझना चाहिए। यही व्यावहारिक बुद्धि का निरपेक्ष आदेश है।

Notes